Self Respect

May 26,2014

बाप बच्चों को ही कहते हैं जो ब्राह्मण बने हैं | दूसरों को नहीं कहेंगे | बच्चे ही प्रिय लगते हैं | हर एक बाप को बच्चे प्रिय लगते हैं | दूसरे को भल बाहर से प्यार करेंगे परन्तु बुद्धि में है – यह हमारे बच्चे नहीं हैं | मैं बच्चों से ही बात करता हूँ क्योंकि बच्चों को ही पढ़ाना है | बाकी बाहर वालों को पढ़ाना तुम्हारा काम है |

तुम जानते हो हम बेगर टू प्रिन्स बनेंगे |

कहते भी हैं ना – हे भगवान्, आपने जो कुछ दिया है वह आपका ही है, हमारा नहीं है | वह तो होता है भक्ति मार्ग | उस समय तो बाबा दूर था | अब बाबा बहुत नज़दीक है | सामने उनका बनना होता है |

भल यह लोन लिया हुआ शरीर है परन्तु तुम्हारी बुद्धि में है हम शिवबाबा से बात करते हैं | यह तो किराये पर लिया हुआ रथ है | उनका थोड़ेही है |

आप मुये मर गई दुनिया | यह मंज़िल है |

तुम ही फ़क़ीर से अमीर और अमीर से फ़कीर बनते हो |

बच्चों को ख़ुशी बहुत रहनी चाहिए | गायन भी है अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोपी वल्लभ के गोप-गोपियों से पूछो | किसको बहुत फायदा होता है तो बहुत ख़ुशी होती है | तो तुम बच्चों को भी बहुत ख़ुशी रहनी चाहिए |

तो बेहद का बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं | इस पुरुषोत्तम संगमयुग की बहुत महिमा है | तुम्हारी भी बहुत महिमा है जो तुम पुरुषोत्तम बनते हो | तुम ब्राह्मणों को ही भगवान् आकर पढ़ाते हैं |

पतित राजायें पावन राजाओं की पूजा करते हैं इसलिए बाप कहते हैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ |

बाप कहते हैं – तुम जो गीता आधाकल्प से पढ़ते सुनते आये हो, उससे कुछ प्राप्ति हुई? पेट तो कुछ भी भरा नहीं | अभी तुम्हारा पेट भर रहा है | तुम जानते हो यह पार्ट एक ही बार चलता है |

तुम जानते हो बाप सम्मुख बैठे हैं, तुम्हारी बुद्धि अब ऊपर में नहीं जायेगी, यह है उनका रथ, इनको बाबा बूट भी कहते हैं, डिब्बी भी कहते हैं | इस डिब्बी में वह हीरा है | कितनी फर्स्टक्लास चीज़ है | इनको तो रखना चाहिए सोने की डिब्बी में | गोल्डन एजड डिब्बी बनाते हैं |

इनको कहते हैं छू मन्त्र | छू मन्त्र से सेकण्ड में जीवनमुक्ति, इसलिए उनको जादूगर भी कहते हैं | सेकण्ड में निश्चय हो जाता है – हम यह बनेंगे | यह बातें अभी तुम प्रैक्टिकल में सुनते हो |

अभी तुम बच्चों को बाप पढ़ा रहे हैं |

यह भी राजधानी स्थापन हो रही है | बच्चों को कितना समझदार बनाया जाता है |

यह है ईश्वरीय यूनिवर्सिटी | भक्त लोग समझते नहीं |

अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने के लिए स्मृति रहे कि यही पुरुषोत्तम संगमयुग है जबकि हमें भगवान् पढ़ाते हैं, जिससे हम राजाओं का राजा बनेंगे | अभी ही हमें ड्रामा के आदि, मध्य, अन्त का ज्ञान है |

मन्मनाभव के साथ मध्याजी भव के मन्त्र स्वरूप में स्थित रहने वाले महान आत्मा भव

अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |